विश्वशांति महायज्ञ

विश्वशांति महायज्ञ

स्थान - देवगाँव, राउरकेला, सुंदरगड़

दिनांक १.०६.२०१० से दिनांक १५.०६.२०१० तक ।

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष चतुर्दशी वृष २८ दिन से ज्येष्ठ शुक्लपक्ष तृतीय/चतुर्थी मिथुन १ दिन तक ।

ॐ

ॐ वंदेऽअव्यक्त पुरुष केशवचंद्राय नमः !!!

वंदेव्यक्तरूपमव्यक्त पुरुषं वंदे ममात्यदेवम्
वंदे त्रियुवन त्रिविक्रमनाथं वंदे त्रिनाथेश्वरम्
वंदे हृदगतं ममदेही देवं वंदे जगज्जीवनम्
वंदे त्रिपुर सुंदर रूपधरं वंदे जवज्जीवनम् ।।

***

वंदे सदा ममहृति तव पादयुगम्
गायतः मेहधर पुटौ तव नाम पुण्यम् ।
पश्यामितेऽखिल रूपं दिवसे च रात्रे
पातु में जगतपिता सर्वकाले तू सर्वथा ।।

***

"राय तूने पूछी गुप्त कथा — सुनने से तेरा चकरायेगा माथा ।
गहन निगूढ़ वार्ता है यह — समय को देखते इसे समझते रहो ।
निराकार ब्रह्म समाधि का ध्यान — योग का संदेश है ये मेरे वचन ।।
मन्वंतर के पूर्व श्रीमहादेव — उतलातल में साधे समाधि योग ।।
साधना में किया अपना मन निवेश — अतल पाताल में जा किया प्रवेश ।।
योगीश्वर ने किया योग-साधन — सहज ढंग से समझ तू यह वचन ।
बाबू राम रे ! इसे रख तू याद — तेरे जीवन में आजाएगा स्वाद ।।
हँसी-मजाक में इसे झूठ तू न मान — नहीं तो मिलेगा तुझे नरक का थान ।।

एकबार महापुरुष अच्युतानंद महाप्रभु ने अपने परमप्रिय शिष्य रामदास के प्रश्नों को सुनकर निर्विकल्प समाधिरूढ़ की अवस्था में निराकार ब्रह्म समाधि के ध्यानयोग की बातें उन्हें सुनाई थीं ।

पूर्व मन्वंतर में देवाधिदेव महादेव शिवशंकर शंभु ने पातालपुर के अतलातल को प्रवेशकर समाधि योग सादना में मन निवेश किया था । यह गहन निगूढ़ बात है । इसी बात को दृढ़ विश्वास के साथ अंतर्मन में सँजोये रखने पर जीवन धन्य हो जाएगा । किंतु हँसी-मजाक में इसे बेकार की बात समझकर टालने की सोच रखने पर नरक की यंत्रणा अवश्य भोगनी पड़ेगी ।

श्रीमहादेव शंकर समाधिरूढ़ की अवस्था में चरम सोपान में पहुँचने पर शेषदेव अनंत ने महेश्वर जी के दाहीने कान के पास फुत्कार की आवाज करते हुए विनम्रता से क्षमा याचना कर कहा - हे पार्वतीपति ! हे सतीनाथ ! आप मुझे क्षमा कीजिए । अब इस मधुसागर का ऊपर उठने का समय पहुँचा है । यह पृथ्वीमाता का वक्षभेद करे पथरीला होगा । मेरा कोई दूसरा चारा नहीं है । समय के प्रवाह के कारण यह अपने आप घटने जा रहा है । आप मुझे क्षमा कीजिए । परंतु इससे महादेव की समाधि टूटी नहीं । कालचक्र ने अपना खेल रचा । उसका परिणाम जो होना था सो हुआ । इसका वर्णन करते हुए महापुरुष अच्युतानंद लिखते हैं -

''पूर्व मन्वंतर में यह स्थान था पाताल में । मधु समुद्र में डूबकर रहा था रसातल में ।।
मधु सागर में विराजमान कर चुके थे हर । समाधि योग को साथ रहे थे योगीवर ।।
कालचक्र ने जैसा रचा अपना खेल । हर नहीं सके हर रहकर भी पाताल ।
मधु सागर से उठा भिन्न भूमि रूप । पहाड़ का साथ घोड़े हो गया उत्थित ।।
उसके साथ शिवलिंग का हुआ अभ्युत्थान । बिन पूजा के भूमि तले शिव रहे म्लान ।।
पेड़-पौधे, लता-बीखे से भर गया वह स्थान । उसके नीचे रह गया शिव जी का आस्थान ।।
ऐसे ही में बीत गया कई सहस्र वर्ष । पूजा के बिना लिंग रहे न मिला गोरस ।।

इसी तरह कालचक्र के प्रवाह में भूमि के नीचे लता-बीखे तथा झुरमूठ की आड़ में शिवलिंग गोदूग्ध की धार न पाकर बिना पूजा के हजार-हजार वर्षों तक वहाँ रह गये । पूर्व मन्वंतर के किसी एक कलियुग के अंतिम समय में त्रिपुरासुर नाम का एक असुर राज उस स्थान में आ पहुँचे । ध्यानयोग केलिए उस स्थान को उपयुक्त समझे वहाँ पद्मासन लगाये बैठ गये, जहाँ पहले से शिवलिंग भूमि के नीचे था । वहाँ बैठकर त्रिपुरासुर शिव पंचाक्षर मंत्र के जाप करते रहे । कुछ दिनों के बाद वे समाधिस्थ हुए । इसे उनका सौभाग्य मानें या दुर्भाग्य लेकिन एक जहरीले नाग साँप के काटने पर उनकी समाधि टूट गयी । विष की ज्वाला तीव्र थी जिसे वे सह न सके । उन्होंने तुरंत जाकर एक पहाड़ी इरने में स्नान किया । परंतु स्नान के उपचार से वे जीवित न रह सके ।

खेतवराह कल्प यानी द्वापरयुग का द्वितीयार्ध अर्थात् आज को लगभग चार लाख सैंतीस हजार ग्यारह वर्ष (४३७०११ वर्ष) पहले उसी स्थान में देवग नामधारी एक शिव उपासक ने पर्ण कुटिया का निर्माण किया और ध्यान, समाधि आदि योग साधन में अपने को नियोजित रखा । इस प्रकार शैवयोगी वहाँ सालों तक पर्वत कानन में योगयुक्त जीवन यापन करते थे । कई बार एक दुर्वार दैवी आकर्षण के प्रभाव से आकर्षित होकर उस स्थान तक जाते थे जहाँ धरती के नीचे शिवलिंग विराजमान थे ! वहाँ पहुँचने पर शिव पंचाक्षर मंत्र (ॐ नमः शिवाय !) का अनुगुंजन स्वतः उनके कानों के पास पाँचबार होता रहता था । मगर इसके रहस्य का उद्घाटन करने में वे समर्थ नहीं हो पा रहे थे । कुछ सालों के बाद उनकी पर्ण कुटिया के पास अनेक आदिम अधिवासी पर्ण कुटिआ का निर्माण करे वहाँ रहने लगे । वे योगी देवग की पूजा गुरु रूप में करने लगे और जंगल से कंद, फल, फूल आदि जंगलजात द्रव्य संग्रह करके लाकर भेंट के रूप में देने लगे । आशीर्वाद पाने केलिए हर दिन प्रणाम भी करते रहते थे । इसी प्रकार दिन, माह, वर्ष बीतता चला । सबकुछ ठीकठाक चलता रहा । मगर एक दिन योगीराज की कुटिआ के पास रहने वाले नारी-पुरुष सभी ने देखा कि योगीराज की कुटिआ खाली है और आसपास में वे कहीं पर भी नजर नहीं आ रहे हैं । ऐसे में बहुत दिन बीत गये किंतु योगी गुरु वापस नहीं आये । इतना ही नहीं, उनकी कोई खोज खबर भी नहीं मिली । समय रूपी रथ आगे की ओर बढ़ता चला । पृथ्वी पर कितनी गरमी, बारिश, बाहार के मौसम आये और अपना-अपना खेल दिकाकर चलते चले । उसका हिसाब किसी के पास न था, न हिसाब रख पाने की क्षमता ही किसके पास थी ।

इसी बीच धरती पर बहुत-से परिवर्तन हो चुके थे । हाल ही में अंग्रेजों के शासन काल में उसी वनांचल के आदिम अधिवासियों की बीच अचानक एक महात्मा संत का आविर्भाव हुआ । उन्होंने वहाँ किसी वटवृक्ष के नीचे आश्रय लिया । आसपास की सरल भोली जनता ने भक्ति और विश्वास के साथ उनकी सेवा की । उनका सारा अभाव पूरा करने में इन लोगों को अपार आनंद प्राप्त होता था । बातचीत के दौरान उन महात्मा साधु ने विंध्याचल से यहाँ आने का अभिप्राय बताते हुए कहा - 'बाबू ! इस गाँव का नाम देवगा है । यहाँ से थोड़ी दूर पर त्रिकरा नामक स्थान में एक शिव मंदिर निर्माण करने की आज्ञा को शिरोधार्य माने मैं बहुत कष्ट से बहुत दूर पैदल आकर यहाँ पहुँचा हूँ । यह कार्य केवल अपने गुरु की अपार करुणा से संभव हो पाया हैं । पथ में मुझे अनेक बाधा-विघ्नों का सामना करना पड़ा पर गुरुदेव के आशीर्वाद से मेरी कुछ हानि नहीं हुई । मैं बिलकुल सुरक्षित रहा । पर याद रखो तुम लोगों को मेरे साथ और कुछ दिनों तक इंतजार करना होगा । सही समय न आने तक हमलोग कुछ कर नहीं सकते । इस त्रिजगत का संचालन विधि के नियाम से हो रहा है । हमें भी उसे मानकर चलना होगा । इस प्रकार वर्ष के बाद वर्ष बीतता चला । कितनी गरमी, कितनी बारिश, कितनी बाहर आयी और गयी । कितने बूढ़े-बुढ़िया इस संसार को अलविदा करकर चल पड़े । कितने बच्चों का जन्म इस धरती पर हुआ । कितने नन्हें-मुन्हों को यौवन प्राप्त हुआ । कितनों का यौवन बुढ़ापे में तबदील हो गया । कितने सुख-दुख, रोना-हँसी आदि उस इलाके को छूकर चलते बने ।

उस समय का देवगा अब देव गाँव है । उस समय यह इलाका घने जंगल से भरा था और इस इलाके के अधिवासीगण उनके प्रकार के असामाजिक कार्य में जुड़कर चोरी, डाकाडालना, नारीहरण और नशा सेवन के आदी थे । थोड़ी दूर पर त्रिकरा नामक स्थान था जो घने जंगल से परिपूर्ण था । ग्वाल संप्रदाय के लोग ब्राह्मणी नदी को पार कर हर दिन अपनी-अपनी गाय-भैंस चराने उस इलाके को आते थे । जंगल के हिंस्र जानवरों के आक्रमण से वचने के लिए अपने साथ एक-एक भाला लेकर आते थे । यह उनके हरदिन की आदत थी । बनभूमि की हरीभरी घास तथा लता-पत्र आदि को चरने के कारण गाय-भैंसे आदि तगड़ी बनती थी और हर गाय बहुत अधिक दूध देती थी । परंतु एक ग्वाल की एक काली गाय तगड़ी दिखाई देने पर भी बिलकुल दूध नहीं देती थी । इसके कारण का पता लगाने उस ग्वाले ने बहुत कोशिशें की परंतु अंत में असफलता ही उसके हाथ लगी । उसने अपने पड़ोस के बड़े ग्वालों से सलाह ली पर वे भी असल कारण बता पाने में असमर्थ रहे । परंतु समय आने पर अपने आप इस राज का पर्दाफाश हुआ । महापुरुष अच्युतानंद की भाषा में -

ऐसा बीतता चला हजारों वर्ष । पूजा के बिना लिंग रहे न मिला गोरस ।।
समय के प्रवाह से गाय ने टपकाया अपना दूध । शिव जी प्रसन्न हुए पाकर गो दूध ।।
सही वक्त पर ग्वाल से कृपा की हर । तब जाकर रहस्य जाना उस अकिंचन नर ।।

एक दिन की घटना है । दैवी संयोग से जंगल में गाय-भैंस की देखरेख कर आगे की ओर बढ़ता जाता था ग्वाल । उन्होंने देखा कि जब सारी गायें हरी भरी घास चर रही हैं, वहीं वह काली गाय शांत भाव से ऊपर को मुँह करे चुपचाप खड़ी है । इसका क्या राज है ? इस राज को जानने उस ग्वाला ने थोड़ी दूर पर झुरमूट की आड़ में उसने वह दृश्य देखा, तो बस देखता रहा पर कुछ कर न सका । देखा कि गाय के थन से दूध की धार निरंतर बह रही है जो बंद होने का नाम ही नहीं ले रही है । वह शांत भाव से संतजार करने लगा बाद की घटना का । कुछ समय बाद उन्हेंने देखा कि गाय के थन से दूध रिसना बंद हो गया और गाय ने मथा लगाये उस स्थान को प्रणाम किया । उसके बाद घास चरने वह चली गयी । गाय जाने के बाद का दृश्य ग्वाला के लिए बड़ा ही अजीब और गरीब था । ग्वाला की दृष्टि तुरंत उस स्थान पर जा पड़ी और उसने देखा कि बड़े-छोटे होकर नौ नाग साँपों का आविर्भाव वहाँ हुआ जिन्होंने घास-पात में लगने वाले दूध पीकर अदृश्य हो गये । उसके बाद भय से ग्वाला ने उस स्थान तक जाकर देखा कि कहीं भी दूध का नामोनिशान नहीं है । उसे बड़ा अचरज हुआ, पर वहाँ से वह चल दिया । इस घटना के बारे में किसीसे कुछ नहीं कहा । मन में इसे छिपाकर रखा । परंतु इस घटना को लेकर उसके मन में उनकों प्रश्न उठने लगे, जिसका उत्तर देने में वह अपने-आप को असमर्थ पाया । उस के बाद वाले दिन में भी उसी घटना की पुनरावृत्ति हुई । लगातार एक हफ्ते तक ऐसी घटना और दृश्य देखकर वह हैरान रह गया । एक दिन उसने अकेला उन साधु महात्मा के पास गया जो पास के गाँव में एक वटवृक्ष के नीचे रहते थे । ग्वाला ने इन तमाम घटनाएँ उन्हें बतायीं । साधु महात्मा की खुशी का ठिकाना न रहा । वे अपने आसन से उठे ग्वाले को आलिंगन करके अपनी भाषा और अपने ढंग से कहने लगे - भाई ! तुम सचमुच भाग्यवान हो । तुमसे हो या किसी दूसरे से हो इसी सुसंवाद को सुनने के लिए मैं कई सालों से इस वृक्ष के नीचे गरमी, सर्दी और बारिश सबकुछ सहकर बैठा हूँ । अब मुझे चिंता करने की जरूरत नहीं । गुरुदेव ने जो समय बताया था वह समय आ पहुँचा है । अब चलो भाई, उस स्थान तक चलो । देरी मत करो मेरे भाई, जल्दी-जल्दी चलो । कंधे में भाला धारण किए हु उस ग्वाला के साथ साधु महात्मा जंगल में जाकर सही जगह पर पहुँचे । उस दिन भी दोनों ने वह दृश्य देखा जो पहले ग्वाले ने देखा था । ठीक उस दिन की भाँति काली गाय ऊपर की ओर मुँह करे खड़ी है और उसके थन से दूध की धारा बहती चली जा रही थी हरी घासोंसे भरी जमीन पर । दूध रिसने के बाद गाय ने भूमि पर माथा टेक प्रणाम किया और चरने गयी । गाय के जाने के बाद नागों का आविर्भाव हुआ और वे दूध पीकर अदृश्य हो गये । उसके कुछ समय बाद साधु और ग्वाला दोनों वहाँ पहुँचे । साधु महात्मा से आदेश पाकर ग्वाले ने अपने भाले से उस स्थान को फाड़ने की कोशिश की । जैसे ही ग्वाले ने भाले से प्रहार किया देखने को मिला कि ताजा खून वहाँ से निकल रहा है । साधु अपनी दोनों हथेली से दूध से भीगे मिट्टी को ऊपर उठा लाये, तब जाकर शिवलिंग दिखाई पड़ने लगे । उसके बाद साधु और ग्वाला ने घास-फूस और रहनी आदि से उस स्थान को ओढ़ दिया और घुटने टेक हाथ जोड़े प्राम किया । उसके बाद वे अपनी-अपनी राह पर वापस लौट गये ।

ग्वाले ने गायों को चराया । साधु महात्मा भी देवगा को लौटकर वटवृक्ष के नीचे विश्राम करने लगे । साधु ने गाँव-गाँव में श्रीभहादेव सर्पेश्वर के आविर्भाव की घटना का प्रचार किया और नियमित

पूजा की व्यवस्था करायी । कुछ दिनों तक श्री महादेव सर्पेश्वर जी की पूजा ऐसी ही चलती रही । एक दिन रात को साधु महात्मा विशुद्धानंद जी को स्वप्नादेश हुआ कि महादेव का नामकरण गलत हुआ है । उनका वास्तविक नाम है बाबा धवलेश्वर । उन्होंने अपने शिष्य से स्वप्न में यह आदेश दिया कि इस सर्पेश्वर नाम का संशोधन कर धवलेश्वर नाम का प्रचार करो और शीघ्रातिशीघ्र उस स्थान को त्याग अपने स्व-आश्रम विंध्याचल की ओर प्रस्थान करो । स्वप्न में गुरुदेव ने जैसे ही आदेश दिया था, विशुद्धानंद जी ने ठीक वैसा ही किया और विंध्याचल लौट गये ।

जाने से पहले उन्होंने उस इलाके के सभी लोगां से इकट्ठा होने का अनुरोध किया और इकट्ठी जनता को कुछ चेतावनी सुनाई । जो पहले महापुरुष अच्युतानंद ने अपने प्रिय शिष्य रामदास को दी थी ।

अपूज्यों को मिलेगी पूजा पूज्य निरादर । हर जगह पर कलियुग का होगा अधिकार ।।
असाध्य रोग आ धमकेगा हर गाँव-गाँव में । आँसू की बाढ़ उमड़ेगी सबके घर-घर में ।।
धन-मन-प्राण का नाश अवश्य होएगा । हठात ही जवान बेटा श्मशान में जाएगा ।।
कहीं पर भी पतिव्रता नारी न मिलेगी । पतिद्रोही पत्नियों की संख्या अनगिनत होगी ।।
विवेकहीन बनेंगे सब नर-नारी । मोह के करण धन-संपत्ति लगेगी उन्हें प्यारी ।।
घर-बार, बेटा-बहू की चिंता मन में रहेगी । प्रभु नाम की याद उन्हें कभी न आएगी ।।
प्रेम-प्रीति, स्नेह-श्रद्धा का विलोप होएगा । आत्मज्ञान का मार्ग सबसे दूर ही रहेगा ।।
पुत्र मेरा रोएगा हृद में रहकर मौन । जंजाल जाल में फँसा है करेगा क्या कौन ?
घर-बार का नाश करे पुत्र उबारेगा । जग में केशव के नाम से वह विख्यात होगा ।।

इधर वहाँ के पूजक (देहुरी) को भी श्री महादेव का स्वप्नादेश हुआ । देहुरी भी स्वप्नादेश के द्वारा जान गया कि त्रिकर में अविर्भूत शिव जी का नाम धवलेश्वर है । पीढ़ी-दरपीढ़ी तक बाबा धवलेश्वर ने स्वप्न में देहुरी को आज्ञा दी । उस दिन से देहुरियों के द्वारा शिवबाबा धबलेश्वर की पूजा कई सौ सालों से होती आ रही है।

समय के बदलाव के साथ 'देव गाँ' जैसे 'देव गाँव' में नामित हुआ ठीक वैसे ही 'त्रिकर' भी 'तरकरा' में रुपांतरित हो गया । यह बात कोई एक दिन साल की नहीं है। कई सौ सालों से अपभ्रंश रुप में यह नाम लोगों के मुँह से सुनाई पड़ता है । यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है । यह तो एक स्वाभाविक घटना है ।

उधर विंध्याचल में गुरुदेव के आश्रम में रहकर साधु विशुद्धानंद जी ने ध्यान- समाधि में मग्न होकर बाबा धवलेश्वर से उनके पास यज्ञानुष्ठान करने की अपनी इच्छा जताई । तब बाबा धबलेश्वर ने 'देवगा' या अबका देव गाँव में सही समय पर चरम पुरुष, परम कारुणिक परमपिता का कर्तृक कराने का वरदान दिया । इसी तथ्य की पुष्टि अच्युतानंद अपने शिष्य राय के सामने कर रहे हैं -

''सुन रे राम ! है यह विचित्र कथा । मन में रख इसे सही करे माथा ।।
इस कलि में एक ही ठाकुर जन्मेगा । जनमुख में केशव नाम उसका कह लाएगा ।।
शुभदिन, पुण्यतिथि देखे यज्ञ वह करेगा । अपनी पूजार्चना से हर को संतुष्ट करेगा ।।
चरम रस से समाप्त करेगा पूर्णाहुति । दर्शक-आत्मा पाएगी काल के बंधन से मुक्ति ।।
प्रभुपाद दर्शन करे करो आत्मातोष । पूर्णाहुति समय में श्रीपाद को घोष ।।

अपने गुरु महापुरुष अच्युतानंद जी से यह सुनकर उनका प्रिय शिष्य रामदास ने पूछा कि कब वह शुभदिन और पुण्ययोग उपस्थित होगा और कब यमानुष्ठान का आयोजन होगा ? इसका उत्तर देते हुए अच्युतानंद गोसाईं कहते हैं -

''दिव्यसिंह राजा के वेदग्रह अंक में । जेठ माह काकपक्ष की भुवनी तिथि में ।।
सुरवादी गुरुवार में चंद्र में वृष होगा स्थित । कृत्तिक नक्षत्र का भोग होएगा समाप्त ।।
विश्वशांति महायज्ञ का आरंभ वे करेंगे । जग में चरम पुरुष का नाम वे पाएँगे ।।
चरम जीवों को ले रचेंगे वे लीला । चरम प्राणियों के संग करेंगे वे क्रीड़ा ।।
चरम समाज में मिले रहेंगे जितने जीव । चरम प्राप्ति से उद्धार होगा उनका ध्रुव ।।

अर्थात् : वेद (४) ग्रह (९) = ४९ अंक में । गजपति महाराजा दिव्यसिंह देव के ४९ अंक में, जेठ माह काक (कृष्ण) पक्ष में, भुवन (चतुर्दश) = भुवनी (चर्तुदशी) तिथि में, सुर (देवता) वादी = असुर गुरु = शुक्रवार में, चंद्र का अवस्थान वृष राशि में रहते समय एवं कृत्रिका नक्षत्र का अंत होने के बाद त्रिकरा या तरकरा में विश्वशांति महायज्ञ का अयमारंभ चरम पुरुष के द्वारा होगा । वे चरमजीव और चरम प्राणियों को साथ ले लीला रचते होंगे । जिन जिवात्माओं का मिलन चरम समाज के साथ हुआ होगा, चरम प्राप्ति देकर वे उनका उद्धार करेगा । पुनः अच्युतानंद कहते हैं -

"मिथुन के पहले दिन होगी पूर्णाहुति । आसमान से बरसेगी पयोधर राशि ।।
वारि बरसने पर हर्षित होगी रसा । थोड़ी हो या बहुत होगी जरुर वर्षा ।।
शीतल होएगी धरा वारि के स्पर्श से । सबकुछ होगा मंगल धरा के हर्ष से ।।

अर्थात् - मिथुन (रज) संक्रांति या आषाढ़ माह के पहले दिन में विश्वशांति महायज्ञ के हवनकुंड में पुर्णाहुति प्रदान की जाएगी । उस दिन आसमान से बारिश होगी । रसा (पृथ्वी) हर्षित होगी । आदि...आदि ।

आज परमकारुणिक, चरमपुरुष परमपिता की अनूठी करुणा और कल्याण से युग-युगांत से रहने वाले असमाहति रहस्य का समाधान संभव हो सका है । विश्वशांति महायज्ञ त्रिकरा या तरकरा के शिवशंभु धवलेश्वर बाबा के पीठ में देवग या देव गाँव की सीमा में स्थित पावन भूमि में होने जा रहा है । यह महायज्ञ परम शिव उपासक साधक देवग की अमर आत्मा की शांति केलिए तथा समग्र विश्व में शांति प्रतिष्ठा के लिए अनुष्ठित हो रहा है । यह भी साधु विशुद्धानंद जी की अभिलाषा को पूरा करने के लिए एक उचित तथा महान कार्य है । इस इलाके में हिंसा, द्वेष आदि का अंत कराये सत्य शांति और मैत्री की प्रतिष्ठा हेतु यह महायज्ञ एक सशक्त आध्यात्मिक कदम है । जिसे नकारा नहीं जा सकता । धर्म, संप्रदाय तथा सारे भेदभाव के भीतर मानवीय प्रेम बंधन का युगानुयायी नीरव आत्मिक आह्वान है यह पवित्र यज्ञानुष्ठान । यह यज्ञ मानवप्रेम और मानवधर्म का सार्थवाह है ।

अब के 'देव गाँव' और 'तरकरा' की पूर्व दिशा में अवस्थित पहाड़ के ऊपर स्वप्नेश्वर का मंदिर विद्यमान है । और पहाड़ की तलहटी में हाल ही में कोई लगभग पंद्रह साल होगा एक जगन्नाथ मंदिर का निर्माण हुआ है । पश्चिम की ओर पानपोष स्थित है । यहाँ गुप्त रुप से सरस्वती, संख एवं कोयल तीनों नदीयाँ मिलकर ब्राह्मणी नदी का नाम लिए बह रही है । तीनों जळवेणी का मिलन होने के कारण यह भी एक त्रिवेणी संगम स्थल या तीर्थस्थान के रूप में परिचित है । द्वापर युग में महर्षि वेदव्यास से इसी तीर्थ स्थान में पर्वत की कंदरा में रहते समय महाभारत की रचना की थी । यह स्थान वेदव्यास का पीठस्थल है । उत्तर दिशा में हनुमान वाटिका एवं पहाड़ के ऊपरी भाग में वैष्णव देवी का मंदिर अबस्थित है । पहाड़ की तलहटी में एक दूसरा जगन्नाथ का मंदिर भी स्थित है । दक्षिण की दिशा में वाणेश्वर का मंदिर है और साथ ही कलकाल नाद करती हुई पुण्यतोया ब्राह्मणी नदी बह रही है ।

इसी इलाके के पूर्व में ओड़िशा, पश्चिम में मध्यप्रदेश और उत्तर-दक्षिण की दिशा में झारखंड राज्य स्थित है । पास में औद्योगिक नगरी राउरकेला और वंशवाहल भी अवस्थित है ।

ॐ स्वस्ति प्रजाभ्यो परिपालयंताम् न्यायेण मार्गेण महीं महीशः ।
गो ब्राह्मणेभ्यो शुभमस्तु नित्यम् लोकाः समस्ताः सुखीनो भवंतु ।।

ॐ शांतिः ! शांतिः !! शांति !!! ॐ

ॐ विश्वगुरु परमात्मने नमः !!!

ॐ श्रीकेशवार्पणमस्तु !!!

हरि ॐ तत्सत् !!!

विश्वभ्रातृत्व दिव्यात्मा परिषद,

क्षितिज्योतिः आश्रम, स्वर्णक्षेत्र
माहांगा, कटक, ओड़िशा